GEMS OF VEDAS
वेद के रत्न

KANAYALAL TALREJA
कन्हैयालाल तलरेजा

RASHTRIYA CHETANA SANGATHAN
P-65, Pandav Nagar, Mayur Vihar, Phase-I,
New Delhi-110 091
Tel. : 22791183 Mobile : 9810303033

Price : Rs. 15-00

THOUGHT-PROVOKING BOOKS
Authored by Kanayalal Talreja

1.	Philosophy of Vedas	140-00
2.	Pseudo-Secularism in India	400-00
3.	Secessionism in India	400-00
4.	Hindus Betrayed	60-00
5.	हिन्दुओं के साथ विश्वासघात	70-00
6.	200 Himalayan Blunders	30-00
7.	दो सौ भयंकर भूलें	40-00
8.	Who are Communal ?	12-00
9.	साम्प्रदायिक कौन ?	12-00
10.	Who are Communal ? (In Tamil)	12-00
11.	Who are Communal ? (In Malayalam)	12-00
12.	Historic Quotes of Guruji M.S. Golwalkar	8-00
13.	श्री गुरुजी गोलवलकर के ऐतिहासिक उद्धरण	8-00
14.	100 Questions about Ms. Sonia Gandhi	40-00
15.	श्रीमती सोनिया गांधी संबंधित १०० प्रश्न	50-00
16.	Secessionist Activities of Christian Missionaries	30-00
17.	Pseudo-Secularism in India (In Marathi) Entitled ढोंगी निधर्मवाद	180-00
18.	Holy Vedas and Holy Bible — A Comparative Study	200-00
19.	पवित्र वेद और पवित्र बाइबिल — तुलनात्मक अध्ययन	150-00
20.	An Appeal To Hindu Law-Makers	140-00
21.	हिन्दू विधि-निर्माताओं से अनुरोध	150-00
22.	Concept of *Jihad* Against *Kafirs* in Holy Quran	35-00
23.	कुरआन मजीद में काफ़िरों के विरुद्ध जिहाद की अवधारणा	40-00
24.	Horrendous Consequences of Article 370	8-00
25.	अनुच्छेद ३७० के भयानक दुष्परिणाम	10-00
26.	Triumphant March To *'Param Vaibhav'* (Supreme Glory)	50-00
27.	'परम वैभव' की ओर विजय अभियान	60-00
28.	Pearls of Vedas वेद के मोती	800-00

TERMS: 1. Discount : 20 % for 10 copies or more, 30 % for 25 copies or more, 40 % for 50 copies or more.

2. Please send demand draft or pay order or cheque in favour of **Rashtriya Chetana Sangathan** only after our response.

Rashtriya Chetana Sangathan

P-65, Pandav Nagar, Mayur Vihar, Phase-I, New Delhi-110091

Tel. 22791183, Mobile : 9810303033

GEMS OF VEDAS
वेद के रत्न

I have written three books on Vedas : **1. Philosophy of Vedas** in January 1982. **2. Holy Vedas and Holy Bible — A Comparative Study** in April 2000. **3. Pearls of Vedas** in August 2006. Some persons suggested to me to bring out gist of the said three books containing quotable quotes. I, therefore, selected small quotable parts and phrases of some Ved *Mantras* from the afore-mentioned three books, which can be not only quoted in lectures and writings but also **painted on walls** of the temples and public places. The youngsters who do not know Sanskrit can easily recite and remember the below-mentioned **Vedic quotations**, which are indeed **valuable gems.**

New Delhi
First July 2007

Kanayalal Talreja

One God एक ईश्वर

१. स एष एक एकवृदेक एव।

अथर्ववेद १३/४/२०

वह एक ही है अद्वितीय अकेला विद्यमान।

Verily He is One, Single, Indivisible, Supreme Reality.

One God, many names ईश्वर एक, नाम अनेक

२. एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।

ऋग्वेद १/१६४/४६

एक ही है सत्यस्वरूप परमात्मा जिसको

विद्वान अनेक नामों से पुकारते हैं।

God is one Supreme Reality, Whom sages call by various names.

Formless God निराकार ईश्वर

३. न तस्य प्रतिमाऽअस्ति।

यजुर्वेद ३२/३

उसकी (परमात्मा की) कोई प्रतिमा नहीं है। (वह निराकार है।)

He has no shape, no form, no image.

Formless God निराकार परमात्मा

४. स पर्य्यगाच्छुक्रमकायम्।

यजुर्वेद ४०/८

वह है सर्वव्यापक, तेजस्वी, प्रकाशमान, शरीररहित निराकार भगवान।

He is Omnipresent, Omnipotent, Effulgent, Luminous, Formless Entity.

Omnipresent Om सर्वव्यापक ओ३म्

५. ओ३म् खं ब्रह्म।

यजुर्वेद ४०/१७

ओ३म्, सब का परम रक्षक परमात्मा, सम्पूर्ण ब्रह्मांड में व्याप्त हो रहा है।

Om, the Supreme Lord, Protector of all, pervades the whole cosmos.

Unborn अजन्मा

६. अजऽएकपात्।

यजुर्वेद ३४/५३

वह अजन्मा, अविनाशी और अविभाज्य है।

He is Unborn, Indestructible and Indivisible.

Omnipresent Almighty सर्वव्यापक परमेश्वर

७. ईशा वास्यमिदᳫं सर्वं।

यजुर्वेद ४०/१

ईश्वर समस्त प्राणियों में व्याप्त हो रहा है।

God pervades all beings.

God pervades all ईश्वर सब में व्याप्त है

८. सऽओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु।

यजुर्वेद ३२/८

ईश्वर सब प्रजाओं में ओत-प्रोत विद्यमान है, जैसे ठाड़े तथा आड़े सूतों में वस्त्र।

God pervades all beings within and without like warp and woof of a cloth.

Soul in womb गर्भस्थ जीवात्मा

९. प्रजापतिश्चरति गर्भेऽअन्तः।

यजुर्वेद ३१/१९

सर्वरक्षक सर्वेश्वर गर्भस्थ जीवात्मा के भीतर और सब प्राणियों के हृदयों में विचर रहा है।

Providence, the Protector of the people, pervades the soul in the womb and the hearts of all beings.

Worship One God एक ईश्वर की उपासना

१०. मा चिदन्यद्वि शंसत सखायः

ऋग्वेद ८/१/१, सामवेद १३६०

हे मित्रो! एक ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य की उपासना नहीं करो।

O friends! adore none else but One God.

Adore One God एक परमेश्वर की उपासना

११. एक एव नमस्यो विक्ष्वीडयः।

अथर्ववेद २/२/१

ब्रह्मांड का नमस्कार योग्य स्वामी एक ही है। उसकी ही स्तुति और उपासना करनी चाहिए।

There is only One Lord of the cosmos. He alone ought to be adored.

Sole Sovereign अद्वितीय सम्राट

१२. एको विश्वस्य भुवनस्य राजा।

ऋग्वेद ६/३६/४

वह संपूर्ण ब्रह्मांड का अकेला ही सम्राट् है।

He is the Sole Sovereign of the universe.

God is Friend परमात्मा मित्र है

१३. स न इन्द्रः शिवः सखा।

ऋग्वेद ८/९३/३

परमात्मा हमारा कल्याणकारी मित्र है।

God is our benevolent friend.

God's devotee remains invincible
ईश्वर का भक्त अजेय रहता है

१४. न यस्य हन्यते सखा न जीयते कदा चन।

ऋग्वेद १०/१५२/१

ईश्वर का भक्त कदाचित नहीं मारा जाता है और न ही पराजित होता है।

God's devotee is neither defeated, nor slain.



God is our Father ईश्वर हमारा पिता है

१५. त्वं हि नः पिता वसो।

सामवेद ११७०, ऋग्वेद ८/९८/११
अथर्ववेद २०/१०८/२

हे सर्वव्यापक ईश्वर! तू ही हमारा पूजनीय पिता है!
O Omnipresent Almighty! You are our Father Benign!

God is our Mother ईश्वर हमारी माता है

१६. त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।

सामवेद ११७०, ऋग्वेद ८/९८/११
अथर्ववेद २०/१०८/२

हे अनन्त कर्म करने वाले ईश्वर! तू ही हमारी दिव्य माता है!
O God, Doer of hundreds of deeds! You are our Mother Divine!

God is near ईश्वर समीप ही है

१७. अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति सन्तं न पश्यति।

अथर्ववेद १०/८/३२

ईश्वर हमारे इतना समीप है कि वह पृथक नहीं हो सकता और न ही वह दिख पाता।
God is too near to be abandoned. He is too close to be witnessed.

God is within you ईश्वर तुम्हारे हृदय में है

१८. य युष्माकम् अन्तरम् बभूव।

ऋग्वेद १०/८२/७

ईश्वर तुम्हारे हृदय में विद्यमान है।
God dwells within your heart.

God is Perfect परमात्मा पूर्ण है

१९. पूर्णात् पूर्णमुदचति पूर्णं पूर्णेन सिच्यते।

अथर्ववेद १०/८/२९

पूर्ण परमात्मा की पूर्ण शक्ति से उत्पन्न हुआ है पूर्ण ब्रह्माण्ड।

Perfect Providence by means of perfect power has created perfect cosmos.

God is the Refuge of all ईश्वर सब का शरणस्थान है

२०. यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्।

यजुर्वेद ३२/८

ईश्वर सम्पूर्ण विश्व का है शरणस्थान, जैसे घोंसले में करते हैं पक्षी विश्राम।

God is the Refuge of the whole universe like a nest, the shelter of birds.

God observes all ईश्वर सबको देख रहा है

२१. त्वं वरुण पश्यसि।

ऋग्वेद १/५०/६

हे सर्वश्रेष्ठ एवं वरणीय परमेश्वर! तू सब को देख रहा है।

O Supreme Glorious God! You observe all.

One Source of all सब का उद्गम एक

२२. विश्वेषामिज्जनिता ब्रह्मणामसि।

ऋग्वेद २/२३/२

हे ईश्वर! तू समस्त लोकों, ऐश्वर्यों तथा ज्ञानों का उद्गम है।

O God! You are the Source of all people, all wealth and all knowledge.

How to conquer death? मृत्यु पर विजय कैसे ?

२३. तमेव विदित्वाति मृत्युमेति।

यजुर्वेद ३१/१८

जो परमेश्वर के अस्तित्व का प्रत्यक्ष अनुभव करता है वह ही मृत्यु पर विजय प्राप्त करता है।

By realising Him only, one conquers death.

Immortal soul अमर आत्मा

२४. वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम्।

यजुर्वेद ४०/१५

आत्मा अमर है, परन्तु शरीर तो अन्त में भस्म हो जाता है।

Soul is immortal, while the body is finally reduced to ashes.

Recite Om ओ३म् का स्मरण

२५. ओ३म् क्रतो स्मर।

यजुर्वेद ४०/१५

ओ३म् का कर स्मरण और ध्यान।

Recite Om, meditate on Om.

Meditate on God ईश्वर का ध्यान

२६. क्लिबे स्मर कृतं स्मर।

यजुर्वेद ४०/१५

हे जीव! (मृत्यु समय) ईश्वर का कर ध्यान।

अपनी त्रुटियों एवं किए हुए कर्मों का स्मरण कर, कर्मवान!

O man! (at the time of death) remember God.

Remember your past deeds, your errors.

Study of Vedas वेदों का स्वाध्याय

२७. देवस्य पश्य काव्यम्।

सामवेद ३२५

परमात्मा के वेदरूपी काव्य को देखो अर्थात् वेद का स्वाध्याय करो।

Behold the divine poetry of Providence in the form of Vedas i.e. study Vedas regularly.

Act according to Vedas वेदों के अनुसार आचरण

२८. मन्त्रश्रुत्यं चरामसि।

ऋग्वेद १०/१३४/७

हम वेद मंत्रों के अनुसार आचरण करें।

May we act in accordance with *Mantras*(verses) of Vedas!

Aryanise श्रेष्ठ बनाओ

२९. कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

ऋग्वेद ९/६३/५

सम्पूर्ण संसार को आर्य (श्रेष्ठ) बनाओ।

Aryanise (ennoble) all men of the universe.

***Dharma* धर्म**

३०. पृथिवीं धर्मणा धृताम्।

अथर्ववेद १२/१/१७

पृथिवी धर्म के सहारे टिकी है।

The earth is sustained by *Dharma.* (religion, righteousness)

Truth सत्य

३१. सत्येनोत्तभिता भूमिः।

अथर्ववेद १४/१/१

भूमि सत्य से थमी हुई है।

The earth is sustained through truth.

Path of truth सत्य का मार्ग

३२. ऋतस्य पथा प्रेत।

यजुर्वेद ७/४५

सत्य के मार्ग पर चलो।

Tread on the path of truth.

Path of truth सत्य का मार्ग

३३. ऋतस्य पन्थामनु पश्य साध्वङ्गिरसः सुकृतो येन यन्ति।

अथर्ववेद १८/४/३

सत्य का मार्ग अपनालो, जिस मार्ग से सदाचारी विद्वान लोग चलते हैं।

Observe the path of truth, which is trodden by the virtuous enlightened sages.

Triumph of truthful सत्यवादी की विजय

३४. ऋतस्य गोपा न दभाय सुक्रतुः।

ऋग्वेद ९/७३/८

सत्य का संरक्षक कर्मयोगी किसी से दबाया नहीं जा सकता।

The noble man who pursues the path of truth, is never defeated by any body.

Hear good अच्छा सुनो

३५. भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा।

ऋग्वेद १/८९/८

हे विद्वानो! हम कानों से अच्छे वचन सुनें कल्याणकारी।

O enlightened scholars! May we ever hear with our ears whatever is good!

See good अच्छा देखो

३६. भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।

ऋग्वेद १/८९/८

हे विद्वानो! हम आंखों से अच्छा दृश्य देखें मंगलकारी।

O enlightened scholars! May we ever see with our eyes whatever is good.

Noble thoughts श्रेष्ठ विचार

३७. आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः।

ऋग्वेद १/८९/१

हमें सब ओर से श्रेष्ठ शुभ विचार प्राप्त हों।

Let noble auspicious thoughts come to us from all directions.

Ignoble deeds कुकर्म

३८. अघमस्तु अघकृते।

अथर्ववेद १०/१/५

बुरा करने वाले का हमेशा बुरा होता है।

He who harms others, is himself harmed.

Fruit of action कर्म का फल

३९. पक्तारं पक्वः पुनरा विशाति।

अथर्ववेद १२/३/४८

मनुष्य वही खाता है जो वह पकाता है, अर्थात् वह अपने किये का फल भोगता है।

Man eats what he bakes, that is he reaps what he sows.

Defamation निन्दा

४०. निन्दितारो निन्द्यासो भवन्तु।

ऋग्वेद ५/२/६

निन्दक स्वयं निन्दनीय हो जाते हैं।

Those who defame others, are themselves defamed.

Criminal दुष्कर्मी

४१. दुष्कृते मा सुगं भूत्।

ऋग्वेद ७/१०४/७

दुष्कर्मी को सुख नहीं मिलता।

Criminal never remains happy.

Auspicious resolve शुभ संकल्प

४२. तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।

यजुर्वेद ३४/१

मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो!

May my mind resolve to do auspicious noble deeds!

Noble thoughts श्रेष्ठ विचार

४३. यद्भद्रं तन्नऽआ सुव।

यजुर्वेद ३०/३

हे परमात्मा! हमें श्रेष्ठ विचार प्रदान कीजिए।

O God! bestow on us noble thoughts.

Noble deeds श्रेष्ठ कर्म

४४. देवस्य सवितुः सवे कर्म कृण्वन्तु मानुषाः।

अथर्ववेद ६/२३/३

सर्वउत्पादक परमेश्वर के शासन में सब मनुष्य श्रेष्ठ कर्म करते रहें।

In the realm of the Resplendent Creator of the cosmos, let all people perform noble deeds.

Prayer प्रार्थना

४५. विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।

ऋग्वेद ५/८२/५, यजुर्वेद ३०/३

हे ईश्वर! हमारी समस्त निकृष्ट प्रवृत्तियों को दूर कीजिए।

O God! dispel all our evil impulses.

Virtuous path उत्तम मार्ग

४६. भद्रं नो अपि वातय मनः।

ऋग्वेद १०/२०/१

हे स्वप्रकाशस्वरूप परमेश्वर! हमारे मन को उत्तम मार्ग पर ले चलिये।

O Resplendent Lord! lead our mind to virtuous path.

Stainless life श्रेष्ठ जीवन

४७. नो वस्यसस्कृधि।

सामवेद १०४७

हे परमात्मा! हमें श्रेष्ठ जीवन वाला बनाइये।

O God! bestow on us stainless virtuous life.

Vedic path वैदिक मार्ग

४८. मा प्र गाम पथो वयम्।

अथर्ववेद १३/१/५९

वैदिक मार्ग से हम कभी विचलित न हों!

May we not deviate from Vedic path!

Love प्रेम

४९. अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।

अथर्ववेद ३/३०/१

एक दूसरे से ऐसा प्रेम करो जैसे गौ अपने नवजात बछड़े को प्यार करती है।

Love one another, as cow loves her newly-born calf.

Hatred द्वेष

५०. वि द्वेषांसीनुहि।

ऋग्वेद ६/१०/७

द्वेष को त्याग कर।

Give up hatred.

Live, let live जियो, जीने दो

५१. जीवा स्थ जीव्यासं।

अथर्ववेद १९/६९/१

तुम भी जियो, मुझे भी जीने दो।

You may live, let me also live.

Non-violence अहिंसा

५२. अनागोहत्या वै भीमा।

अथर्ववेद १०/१/२९

निर्दोष की हत्या करना अवश्य भयानक पाप है।

The slaughter of an innocent is a dreadful sin.

Friendly eye मित्र की दृष्टि

५३. मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।

यजुर्वेद ३६/१८

हम सब एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें!

May we all look at one another with friendly eye!

Friendliness मित्रता

५४. सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।

अथर्ववेद १९/१५/६

सब दिशाओं के लोग मेरे मित्र बने रहें!

May the people of all directions be friendly to me!

Sweetness of tongue मधुर वाणी

५५. जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम्।

अथर्ववेद १/३४/२

मेरी जिह्वा के अग्रभाग तथा मूल में मधुरता हो!

May the tip as well as root of my tongue be sweet as honey!

Nation राष्ट्र

५६. त्वं राष्ट्राणि रक्षसि।

अथर्ववेद १९/३०/३

हे मनुष्य! तू राष्ट्रों का रक्षक है।

O man! you are protector of the nations.

Nation राष्ट्र

५७. मा त्वद्राष्ट्रमधि भ्रशत्।

यजुर्वेद १२/११, ऋग्वेद १०/१७३/१
अथर्ववेद ६/८७/१

सावधान! तेरा राष्ट्र कभी अवनत न हो!

Beware! may your nation not collapse!

Motherland मातृभूमि

५८. माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।

अथर्ववेद १२/१/१२

भूमि मेरी माता है, मैं भूमि का पुत्र हूं।

Land is my mother, I am son of the soil.

Motherland मातृभूमि

५९. उप सर्प मातरं भूमिम्।

ऋग्वेद १०/१८/१०

तू मातृभूमि की सेवा कर।

Serve your motherland.

Sacrifice for motherland मातृभूमि के लिए बलिदान

६०. वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम।

अथर्ववेद १२/१/६२

हे मातृभूमि! हम तेरे लिए अपना जीवन करें बलिदान!

O motherland! May we sacrifice our lives for thy sake!

Common goal समान उद्देश्य

६१. सं गच्छध्वम् सं वदध्वम्।

ऋग्वेद १०/१९१/२

हे मनुष्यो! तुम संयुक्त होकर पग बढ़ाते चलो
तुम परस्पर मिलकर संवाद करते रहो।

O mankind!
March together, converse together.

Unity of minds मनों की एकता

६२. सं वो मनांसि जानताम्।

ऋग्वेद १०/१९१/२

हे मनुष्यो! तुम्हारे मन एक-समान होकर ज्ञान प्राप्त करें।

O mankind! let your minds be united to acquire knowledge.

Harmony of hearts हृदयों की एकता

६३. समाना हृदयानि वः।

ऋग्वेद १०/१९१/४

हे मनुष्यो! तुम सबके हृदय एक-समान हों।

O mankind! may your hearts be united!

Harmony of hearts हृदयों की एकता

६४. समानी व आकूतिः।

ऋगवेद १०/१९१/४

हे मनुष्यो! तुम सबके संकल्प एक-समान हों।

Ye men! may you resolve with one accord!

Harmony of minds मनों की एकता

६५. समानमस्तु वो मनो।

ऋग्वेद १०/१९१/४

हे मनुष्यो! तुम्हारे मन एक-समान हों।

Ye men! may there be harmony in your minds!
Or may your minds be united!

Common fraternity समान भ्रातृत्व

६६. समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः।

अथर्ववेद ३/३०/६

तुमहारी जलशाला हो समान। तुम्हारे अन्न का भाग हो समान।

Let your drinking place be common.
Let share of your food be common.

Common thoughts समान चिन्तन

६७. समानो मन्त्रः समितिः समानी।

ऋग्वेद १०/१९१/३

तुम सबका चिन्तन मनन हो समान! तुम्हारी समिति और सभा हो समान!

May your thoughts be common! May your congregation be common!

Harmony of minds मनों की एकता

६८. समानं मनः सह चित्तमेषाम्।

ऋग्वेद १०/१९१/३

इन सब मनुष्यों के चित मन हों एक-समान! इन के उद्देश्य, उद्गार और आचार हों समान!

May their minds move with one accord! May their hearts work in harmony!

Harmony in minds and deeds
विचार और व्यवहार में समानता

६९. सं वो मनांसि सं व्रता।

अथर्ववेद ३/८/५

तुम्हारे मन, कर्म और संकल्प हों समान।

May there be harmony in your minds, deeds and determinations!

Light प्रकाश

७०. आ रोह तमसो ज्योतिः।

अथर्ववेद ८/१/८

अन्धकार से निकल कर प्रकाश में आओ।

Rise from darkness to light.

Elevate yourself ऊंचा उठो

७१. उद्यानं ते पुरुष नावयानं।

अथर्ववेद ८/१/६

हे मनुष्य! तू ऊंचा होने की चेष्टा कर।
तेरी सर्वदा हो उन्नति, कभी न हो अवनति।
O man! elevate yourself, ascend high, do not descend low.

Progress उन्नति

७२. रोहेम शरदः शतम्।

अथर्ववेद १९/६७/४

सौ वर्षों तक हम श्रेष्ठता की ओर उत्थान करते रहें!
May we rise high to excellence for a hundred years!

Wealth and glory धन और ऐश्वर्य

७३. वयं स्याम पतयो रयीणाम्।

ऋग्वेद १०/१२१/१०

हे ईश्वर! हम धन और ऐश्वर्य के स्वामी हों!
O God! may we become masters of wealth and glory!

Ascend High ऊपर उठो

७४. आरोहणं आक्रमणं जीवतो जीवतो अयनम्।

अथर्ववेद ५/३०/७

ऊपर उठना और आगे बढ़ना प्रत्येक जीवित मनुष्य का लक्ष्य है।
To ascend high and march ahead is the goal of every living man.

High flag ऊँचा ध्वज

७५. ऊर्ध्वं कृण्वन्त्वध्वरस्य केतुम्।

ऋग्वेद ३/८/८

राष्ट्रीय यज्ञ के ध्वज को ऊँचा रखो।

Hold high the flag of national *Yajna.*

Exalt yourself उन्नति करो

७६. उत् क्रामातः पुरुष माव पत्थाः।

अथर्ववेद ८/१/४

हे मनुष्य! उन्नति करता जा, अवनत मत हो।

O man! exalt yourself, do not fall down.

Not dead-hearted! मुर्दा-दिल नहीं!

७७. मात्र तिष्ठः पराङ्मनाः।

अथर्ववेद ८/१/९

हे पुरुष! इस संसार में मुर्दा-दिल होकर मत रह।

O man! don't live in this world as inactive dead-hearted melancholy man.

Darkness of ignorance अज्ञान-अन्धकार

७८. गूहता गुह्यं तमः।

ऋग्वेद १/८६/१०

बुद्धि में स्थित अज्ञान-अन्धकार को नष्ट करो।

Remove darkness of ignorance from within.

Invincible अजेय

७९. अहमिन्द्रो न परा जिग्य।

ऋग्वेद १०/४८/५

मैं शक्तिमान् अजेय हूँ, किसी से पराजित नहीं हो सकता।

I am *Indra*, the powerful, invincible.

Fearlessness निडरता

८०. अभयं मित्रादभयममित्रादभयं।

अथर्ववेद १९/१५/६

हम मित्र चाहे शत्रु से निडर और निर्भीक रहें!

May we remain fearless from the friend as well as foe!

Courage वीरता

८१. अहमस्मि प्रहन्ता सत्यध्वृतम् वृजिनायन्तम्।

ऋग्वेद १०/२७/१

मैं सत्य के विरोधी और कुटिलगामी को मारने वाला हूं।

I am killer of the enemy of truth and the wicked.

Firm determination दृढ़-संकल्प

८२. न पर्वतासो यदहं मनस्ये।

ऋग्वेद १०/२७/५

जब मैं दृढ-संकल्प कर लेता हूं, तब पर्वत भी मुझे नहीं रोक सकते।

When I determine firmly, mountains cannot obstruct me.

Annihilator of enemies शत्रुहन्ता

८३. अहमस्मि सपत्नहा।

ऋग्वेद १०/१६६/२

मैं शत्रुओं का नाश करने वाला हूँ।

I am annihilator of enemies.

Subjugation of enemies शत्रु-दमन

८४. अधः सपत्ना मे पदोः।

ऋग्वेद १०/१६६/२

शत्रु मेरे पैरों के नीचे हैं।

The enemies are crushed under my feet.

Valorous man वीर पुरुष

८५. स घा वीरो न रिष्यति।

ऋग्वेद १/१८/४

वीर पुरुष कभी हिंसित नहीं होता।

The valorous man is never slain.

Aryan mother declares: आर्य माता घोषणा करती है:

८६. मम पुत्राः शत्रुहणः।

ऋग्वेद १०/१५९/३

मेरे पुत्र हैं शूरवीर शत्रुओं को नाश करने वाले।

My sons are valiant annihilators of enemies.

Aryan valiant woman asserts :
आर्य वीराङ्गना कहती है :

८७. अहमस्मि सञ्जया।

ऋग्वेद १०/१५९/३

मैं हूँ समयक् विजेत्री, विजयशालिनी।

I am conqueress having triumphant spirit.

Aryan brave woman asserts :
आर्य वीराङ्गना कहती है :

८८. अहं केतुरहं मूर्धा।

ऋग्वेद १०/१५९/२

मैं गृहस्थ में शिरोमणि विदुषी हूँ। मैं समाज की ध्वजा और मस्तिष्क हूँ।

I am banner of the community, fore-head of the family and fore-most scholar.

Awake and Arise जागो और उठो

८९. भूत्यै जागरणमभूत्यै स्वपनम्।

यजुर्वेद ३०/१७

जागना जीवन है, सोना मृत्यु है।

Awakening is life, slumbering is death.

Diligence परिश्रम

९०. कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।

अथर्ववेद ७/५०/८

कर्म है मेरे दाहिने हाथ में, विजय है मेरे बायें हाथ में।

Action is in my right hand, victory is in my left hand.

Do constructive work रचनात्मक कार्य कर

९१. यद्येकवृषोऽसि सृजारसोऽसि।

अथर्ववेद ५/१६/१

यदि एक ईश्वर के ज्ञान द्वारा तू बना है सामर्थ्यवान, तो कुछ रचनात्मक कार्य कर, अन्यथा तू है निकृष्ट इन्सान।

If you have acquired power through knowledge of One God, do constructive work, otherwise you are useless man.

Diligence and truth परिश्रम और सत्य

१२. श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्तऋते श्रिता।

अथर्ववेद १२/५/१

यह सृष्टि परिश्रम और तपस्या से उत्पन्न की गई,
ज्ञान से युक्त, सत्य के आधार पर ठहरी हुई है।

This cosmos created by diligence ant toil,
vested with knowledge, stays firmly on the basis of truth.

Diligence परिश्रम

१३. इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं, न स्वप्नाय स्पृहयन्ति।

ऋग्वेद ८/२/१८, अथर्ववेद २०/१८/३

देवता सुकर्मशील परिश्रमी व्यक्ति को चाहते हैं, सोए पड़े को नहीं।

The gods like perseverant energetic active persons,
not sleeping idle people.

Idle man पुरुषार्थहीन मनुष्य

१४. अकर्मा दस्युः।

ऋग्वेद १०/२२/८

कर्म न करने वाला पुरुषार्थहीन मनुष्य ही दस्यु (असभ्य, चोर, डाकू, लुटेरा) होता है।

The slothful idle man tends to become uncultured criminal.

Salute to ploughmen हलवाहों को नमस्कार

१५. नमस्ते लाङ्गलेभ्यो नम ईषायुगेभ्यः।

अथर्ववेद २/८/४

हम खेत जोतने वाले हलवाहों (किसानों) को नमस्कार करते हैं और
उनके हल और जुए की उपयोगिता की प्रशंसा करते हैं।

We salute the ploughmen and appreciate the utility of their
plough and yoke.

Self-rule स्वराज्य -

१६. यतेमहि स्वराज्ये।

ऋग्वेद ५/६६/६

हम स्वराज्य के लिए प्रयत्न करें।

We may endeavour for self-rule.

Independence स्वाधीनता

१७. अदीनाः स्याम शरदः शतम्।

यजुर्वेद ३६/२४

हम किसी के अधीन न होते हुए सौ वर्ष जीवित रहें!

May we live for a hundred years without depending on others!

Learned leader विद्वान नेता

१८. ऋषिर्विप्रः पुरएता जनानाम्।

ऋग्वेद ९/८७/३

मेधावी विद्वान पुरुष ही जनता का नेता हो!

May the genius sage lead the people!

Uplift the fallen गिरे हुए को उठाओ

१९. उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः।

ऋग्वेद १०/१३७/१

हे विद्वानो! गिरे हुए को पुनः ऊपर उठाओ।

Ye scholars! uplift the fallen again.

Blessed hand उत्तम हाथ

१००. करो यत्र वरिवो बाधिताय।

ऋग्वेद ६/१८/१४

हाथ वही उत्तम है जो दुःखी तथा पीड़ितों की सहायता करे।

Blessed is the hand that supports the destitute.

Distribution of wealth धन का वितरण

१०१. शतहस्त समाहर सहस्रहस्त सं किर।

अथर्ववेद ३/२४/५

सौ हाथों से धन को इकट्ठा कर, हज़ार हाथों से उसको बांट दे।

Earn wealth with a hundred hands
and distribute it with a thousand hands.

True friend सच्चा मित्र

१०२. न स सखा यो न ददाति सख्ये।

ऋग्वेद १०/११७/४

जो दरिद्र मित्र की सहायता नहीं करता, वह मित्र नहीं है।

He who does not support his needy friend, is not a friend at all.

Stainless friendship निर्मल मित्रता

१०३. तेऽवृकमस्तु सख्यम्

ऋग्वेद ६/४८/१८

हे मनुष्य! तेरी मित्रता छल-कपटरहित हो।

O man! let your friendship be devoid of duplicity and deceitfulness.

Hoarding is sin **अपसंचयन पाप है**

१०४. केवलाघो भवति केवलादी।

ऋग्वेद १०/११७/६

अकेला खाने वाला अत्यन्त पापी होता है।

He who eats alone, eats sin only i.e. he is great sinner.

Avarice **लोभ**

१०५. मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।

यजुर्वेद ४०/१

अन्य किसीके धन की लालसा नहीं करनी चाहिए।

Do not covet the wealth of any person.

Knowledge **ज्ञान**

१०६. पावका नः सरस्वती।

ऋग्वेद १/३/१०

विद्या, ज्ञान, हमें पवित्र करती है।

Knowledge purifies us.

Salvation through knwoledge **विद्या द्वारा मोक्ष**

१०७. विद्ययामृतमश्नुते।

यजुर्वेद ४०/१४

विद्या से मोक्ष प्राप्त होता है।

Through knowledge salvation is attained.

Yagya *(Yajna)* यज्ञ

१०८. आयुर्यज्ञेन कल्पताम्।

यजुर्वेद १८/२९

अपने जीवन को यज्ञ द्वारा सफल बनाओ।

Make your life prosperous through *Yagya.*

Yagya *(Yajna)* यज्ञ

१०९. इयं ते यज्ञिया तनूः।

यजुर्वेद ४/१३

तुम्हें यह शरीर यज्ञ के लिए मिला है।

You are blessed with this body for performing *Yagya (Yajna).*

***Yajna (Yagya)* यज्ञ**

११०. ईजानाः स्वर्गं यन्ति लोकम्।

अथर्ववेद १८/४/२

यज्ञ करने वाले उत्तम गति (मोक्ष) को प्राप्त करते हैं।

The performers of *Yajna (Yagya)* attain salvation.

Celibacy ब्रह्मचर्य

१११. ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।

अथर्ववेद ११/५/१९

ज्ञानी ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य और तपस्या द्वारा मृत्यु पर विजय प्राप्त करते हैं।

By the dint of celibacy and austerity the sages conquer death.

Obedient son आज्ञाकारी पुत्र

११२. अनुव्रतः पितुः पुत्रो।

अथर्ववेद ३/३०/२

पुत्र पिता के आदर्शों के अनुकूल चले।

May son follow the ideals of his father!

Sweet wife मधुर पत्नी

११३. जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम्।

अथर्ववेद ३/३०/२

पत्नी पति से मधुर वाणी बोले।

May wife talk to her husband in sweet words!

Concord among brothers भ्रातृ-एकता

११४. मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षत्।

अथर्ववेद ३/३०/३

भ्राता भ्राता से द्वेष न करे।

Let no brother hate his brother.

Welfare of mother and father

माता-पिता का कल्याण

११५. स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु।

अथर्ववेद १/३१/४

हमारी माता, हमारा पिता सदा सुखी हों भगवान।

May our mother and father be blessed with health and happine

First Edition: July 1, 2007, Ashaad Krishna 1, 2064, Yugabd 510





Shri Kanayalal Talreja was born on 10th August 1936 at Hayat Pitafi (Shadani Nagar), Taluka Mirpur Mathelo, Distt. Sukkur, Sindh (now in Pakistan). After the partition of the country, he stayed in Sindh for 17 years, and obtained M.A. Degree in English literature from the University of Sind in 1962. He secured first position at four University examinations: Matriculation in 1955, First Year Arts in 1956, Intermediate Arts in 1957 and B.A. (Hons.) in 1959, and was, therefore, awarded **four medals** by the Governor of West Pakistan. He launched his career as a primary teacher and reached the position of lecturer in English at Government College Sukkur (Sindh). In Sindh he fought dauntlessly for the rights of Hindus, and championed the cause of the depressed and down-trodden.

He migrated to Bharat in 1964. He served as Senior Lecturer in English at C.H.M. College Ulhasnagar (Mumbai) for ten years from 1965 to 1975. On account of his devotion, dedication and dashing natutre, he was promoted to the post of **Principal** in 1975 at the young age of 39, and held the post for 16 years. In June 1991, he was transferred to R.D. National College Bandra, Mumbai. As an educationist, he immensely contributed to the cause of education as an active member of Academic Council and **Senate of Bombay University**. He retired voluntarily from the post of Principal on July 10, 1992, in order to enable himself to deliver lectures and write books on **Hindutva.** After retirement he lives in New Delhi.

Principal Kanayalal Talreja is not only reputed **scholar and educationist**, but also a renowned **writer, orator, poet, journalist, linguist, historian, Vedic scholar, political commentator** and **social reformer.** As a linguist he quotes freely from the literature of eight languages: English, Hindi, Sanskrit, Urdu, Arabic, Persian, Sindhi and Punjabi. He is well-conversant with **Quran, Bible, Vedas, Upanishads, Gita** and **Guru Granth Sahib.** His lectures move the audience. His pen possesses miraculous power to transform the readers. In his speeches he recites verses *(Ayats)* of Quran in Arabic and *Mantras* of Vedas in Sanskrit with accurate pronunciation. He is **unique specialist** in comparative study of scriptures of various religions. He is the only Hindu scholar in Bharat, who remembers and recites with meaning hundreds of verses from Holy Vedas, Holy Bible, Holy Quran, Upanishads, Gita and Guru Granth Sahib. He has authored thirty six books. His books have been widely appreciated in Bharat as well as abroad. His books are well-researched, thought-provoking, eye-opener documents based on facts and figures from authentic records. That is why they evoke admiration from legal luminaries, parliament members, journalists and scholars. Some of his books are translated in Hindi, Tamil, Malayalam and Marathi. Some of his poems have been selected and published in school text-books. He has edited two journals : 'Deep Sandesh' and 'Awake and Arise'.

His speeches are often broadcast on All India Radio and Television. He is described in the book, **"Asia Who's Who"**, as "an **eloquent speaker** and a **revolutionary writer** and a passionate **social reformer,** who displays keen interest in rural uplift and the economic promotion of backward classes."

At present, as **President of 'Rashtriya Chetana Sangathan'** he edits two monthly magazines **"Rashtriya Chetana"** in English and **"Rashtriya Sangathan"** in Hindi to create national awareness among the citizens of Hindusthan.